श्रीः

# पञ्चपराग।

अर्थात्

## पांच आख्यायिकाओं का संग्रह.

श्रीदर्पण तथा शुभचिन्तक से पुनर्मुद्रित.

श्रीमन्निम्बार्कसम्प्रदायाचार्य-

श्रीछबीलेलालगोस्वामि-लिखित,

एवं तदीय-

श्रीसुदर्शनप्रेस, वृन्दावन से

छपकर प्रकाशित।



सन् १९१६ ई०

प्रथमबार १००० — मूल्य [illegible] आने